परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुबह तक भोजन न बचाने का आदेश
क्यों दिया?

प्रश्न: जब इस्राएली मिस्र से निकल रहे थे, तब परमेश्वर ने उन्हें भोजन सुबह तक न रखने का आदेश क्यों दिया?

उत्तर: “भोजन बचाना” का अर्थ है उसे बाद के लिए या अगले दिन के लिए संभाल कर रखना – आमतौर पर तब, जब कोई व्यक्ति भरपेट खा चुका होता है और बाकी भोजन को फेंकना नहीं चाहता। कभी-कभी लोग बाद में भूख लगने पर खाने के लिए भोजन बचा कर रखते हैं।

उस रात जब इस्राएली मिस्र से निकल रहे थे, परमेश्वर ने उन्हें विशेष निर्देश दिए। हर परिवार को एक मेमना मारना था, उसका लहू अपने घरों के दरवाज़ों के दोनों ओर और ऊपर लगाना था, और उसी रात उसका मांस खाना था। परमेश्वर ने यह भी बताया कि मेमने को कैसे पकाना है – वे उसे उबाल कर नहीं, बल्कि आग पर भून कर खाएं, और कड़वे साग के साथ खाएं। यह सब जल्दी में करना था ताकि वे सुबह तक न खाते रहें, क्योंकि ऐसा करना पाप माना जाता।

इन निर्देशों के साथ परमेश्वर ने एक और महत्वपूर्ण आज्ञा दी: कोई भी परिवार मेमने का मांस सुबह तक न छोड़े। या तो सब खा लिया जाए, या अगर कुछ बच जाए तो सुबह होने से पहले जला दिया जाए। मुख्य बात थी कि कुछ भी सुबह तक नहीं बचना चाहिए। यदि किसी ने इस आज्ञा का उल्लंघन किया, तो वह पाप माना जाता। यह आदेश इसलिए दिया गया ताकि इस्राएली पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर रहना सीखें – बिना किसी बदलाव या अपनी मर्जी के अनुसार कुछ जोड़ने या

परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुबह तक भोजन न बचाने का आदेश
क्यों दिया?

घटाने के।

निर्गमन 12:10:
“तुम कुछ भी उसमें से सुबह तक नहीं बचाना। अगर कुछ बच जाए, तो
उसे आग में जला देना।”

यह आज्ञा परमेश्वर की सटीक बातों का पालन करने और उनके प्रति विश्वास दिखाने का एक तरीका था। परमेश्वर चाहता था कि वे पूरी तरह से उसकी देखभाल पर भरोसा करें – अपने भविष्य की योजना पर नहीं।

परमेश्वर ने ये आदेश क्यों दिए?

परमेश्वर ने यह आदेश इसलिए दिया ताकि इस्राएली पूरी तरह से उस पर भरोसा करना सीखें। उन्हें कल की चिंता नहीं करनी थी – कि वे क्या खाएंगे या क्या पहनेंगे – बल्कि परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करना था। अगर परमेश्वर ये आदेश न देता, तो हो सकता है लोग थोड़ा खाकर कुछ बचाकर रख लेते और अगली सुबह के भोजन की चिंता करने लगते – बजाय इसके कि वे भरोसा करें कि परमेश्वर अगली बार भी देगा।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुबह तक भोजन न बचाने का आदेश
क्यों दिया?

परमेश्वर उन्हें रोज़ाना निर्भरता सिखाना चाहता था। जैसे उसने जंगल में मन्ना दिया, उसी तरह वह चाहता था कि लोग समझें – हर दिन वह ही प्रदान करेगा, और उन्हें भंडारण या संपत्ति पर भरोसा करने की ज़रूरत नहीं।

निर्गमन 16:4-5:
“तब यहोवा ने मूसा से कहा, ‘देख, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग से रोटी बरसाऊंगा। लोग प्रतिदिन जाकर उस दिन के लिए रोटी
बटोरें, और मैं उन्हें परखूं कि क्या वे मेरी आज्ञाओं के
अनुसार चलते हैं या नहीं।’”

परमेश्वर ने मन्ना भी हर दिन के लिए ही दिया। अगर किसी ने उसे अगले दिन के लिए बचा कर रखा, तो वह खराब हो गया।

निर्गमन 16:19-20:
“मूसा ने उनसे कहा, ‘कोई भी उसमें से कुछ भी सुबह तक न छोड़े।’ लेकिन कुछ लोगों ने उसकी बात नहीं मानी और थोड़ा बचाकर रखा। सुबह वह कीड़ों से भर गया और बदबू मारने लगा। मूसा उनसे क्रोधित हुआ।”

परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुबह तक भोजन न बचाने का आदेश
क्यों दिया?

यह इस बात की याद दिलाता है कि हम परमेश्वर की व्यवस्था को अपनी सुविधा के अनुसार मोड़ नहीं सकते। हमें हर दिन उसकी आज्ञा का पालन करते हुए जीना है – भरोसे के साथ।

मत्ती 6:31-34:
“इसलिए तुम चिंता मत करो कि हम क्या खाएंगे? या क्या पिएंगे?
या क्या पहनेंगे?
ये सारी बातें अन्यजाति लोग खोजते हैं; पर तुम्हारा
स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब चीजों की आवश्यकता है।
पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता को खोजो, तो
ये सब चीजें तुम्हें मिल जाएंगी।
इसलिए कल की चिंता मत करो, क्योंकि कल की चिंता वह दिन खुद करेगा। हर दिन की अपनी परेशानी होती है।”

यीशु सिखाते हैं कि परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को जानता है, और हमें अपने भविष्य के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए – बल्कि पहले उसके राज्य और धार्मिकता की खोज करनी चाहिए।

यह हम में से प्रत्येक के लिए भी एक सीख है

जब हम उद्धार पाएँ, तो हमें अपने जीवन की चिंता में नहीं पड़े

परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुबह तक भोजन न बचाने का आदेश
क्यों दिया?

रहना चाहिए – चाहे वह भोजन हो, कपड़े हों या भविष्य। भले ही हमें यह न दिखे कि कल कैसे बीतेगा, फिर भी हमें भरोसा रखना है: परमेश्वर हमारी ज़रूरतें पूरी करेगा।

मत्ती 6:25:
“इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ: अपने जीवन के लिए चिंता मत करो –
कि तुम क्या खाओगे या क्या पियोगे; न ही अपने शरीर के लिए –
कि क्या पहनोगे। क्या जीवन भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं है?”

परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हम किस प्रकार संचय कर सकते हैं?

अब आइए मन्ना के उदाहरण को फिर देखें। जब आप आगे पढ़ते हैं, तो आप देखेंगे कि किस प्रकार का संचय परमेश्वर ने स्वीकार किया।

निर्गमन 16:21–25:
“हर सुबह वे उतना बटोरते जितना उन्हें उस दिन के लिए चाहिए होता। जैसे ही सूर्य तेज़ होता, वह पिघल जाता।
छठे दिन उन्होंने दोगुना बटोरा – हर व्यक्ति के लिए दो
ओमेर। फिर लोगों के अगुवे मूसा के पास आए और उसे बताया।
मूसा ने उनसे कहा, ‘यहोवा ने कहा है: कल विश्राम का दिन है,

परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुबह तक भोजन न बचाने का आदेश
क्यों दिया?

यहोवा के लिए पवित्र विश्राम का दिन। आज तुम जो पकाना चाहते हो वह पकाओ, और जो उबालना चाहते हो वह उबालो। जो भी बच जाए,
उसे सुबह तक रखो।’
उन्होंने ऐसा ही किया और वह मन्ना न तो सड़ा और न ही उसमें कीड़े पड़े।
मूसा ने कहा, ‘आज उसे खाओ, क्योंकि आज यहोवा का विश्राम दिन
है। आज तुम मैदान में मन्ना नहीं पाओगे।’”

ध्यान दें कि जब उन्होंने विश्राम दिन के लिए भोजन बचाया, तो वह उनकी आराम और भक्ति के लिए था – न कि केवल सुविधा या आनंद के लिए। इसलिए वह खराब नहीं हुआ।

निर्गमन 16:23:
“कल यहोवा का विश्राम दिन है – यहोवा के लिए पवित्र दिन।”

यह दिखाता है कि परमेश्वर के अनुसार बचत या संचय तब सही है, जब उसका उद्देश्य उसकी आज्ञाओं और आराधना के लिए हो।

लेकिन जब संचय केवल अपने लाभ, ऐशोआराम या भविष्य की सुरक्षा के लिए होता है, तो उसका परिणाम विनाश होता है। यह बात यीशु ने एक दृष्टांत में स्पष्ट की:

परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुबह तक भोजन न बचाने का आदेश
क्यों दिया?

लूका 12:16–21:
“फिर उसने उन्हें एक दृष्टांत सुनाया: ‘एक धनवान के खेत में बहुत उपज हुई।
उसने अपने मन में सोचा, ‘मैं क्या करूँ? मेरे पास अपनी फसल रखने के लिए जगह नहीं है।’
फिर उसने कहा, ‘मैं यह करूँगा: मैं अपनी पुरानी खत्तों को गिरा दूँगा और बड़ी खत्तें बनाऊँगा और वहाँ अपनी सारी फसल और माल रखूँगा।
फिर मैं अपने आप से कहूँगा: आत्मा, तेरे पास बहुत कुछ संचित है – कई वर्षों के लिए। अब चैन से बैठ, खा, पी, और मौज कर!’ लेकिन परमेश्वर ने उससे कहा, ‘अज्ञानी! आज रात ही तेरी आत्मा तुझसे मांग ली जाएगी। फिर जो तूने जमा किया है, वह किसका होगा?’
इसी प्रकार वह व्यक्ति मूर्ख है जो अपने लिए धन संचित करता है, परन्तु परमेश्वर के सामने धनवान नहीं होता।”

यह दृष्टांत दिखाता है कि परमेश्वर से हटकर केवल अपने लिए संचित करना व्यर्थ है।

निष्कर्ष:

परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुबह तक भोजन न बचाने का जो आदेश

परमेश्वर ने इस्राएलियों को सुबह तक भोजन न बचाने का आदेश
क्यों दिया?

दिया, वह उनके लिए विश्वास और आज्ञाकारिता का सबक था।

उसी तरह, जब हम बचत करें या योजना बनाएं, तो वह ईश्वर के राज्य और उद्देश्यों के लिए होनी चाहिए – ना कि स्वार्थपूर्ण लाभ के लिए।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp